No ६९३२ · पत्र 85 · ८५

ॐ अथ भैरवी रागनी प्रारंभः हनुमान मतेन ॥ इह
रागनी दिन के तीसरे पहर गाई जातीहै अरु संपूर्ण
है अरु भैरव की स्त्रीहै अरु अंश न्यास ग्रह इसका धै
वतहै अरु ब्रह्मा नारद इसके देवता है अरु इसका
तुमरु ऋषिहै उष्णिक छंद है अरु मध्या धीरा नायि
हेमंत ऋतु हैं
का है अरु धृष्ट नायिक है अरु इसका वीर रस है ।

ॐ अथ सैंधवी रागनी ध्यानम ॥ श्लोक । प्रलंब कर्णा

वपुषा च गौरी वीणा दधाना स्वर पुष्प गंधी वक्ता तु

रक्ता स्वर भूषणो ये गीतेषु दत्ता किल सैंधवीति ॥

ॐ श्लोक । शक्ति हस्ता महा काया पुष्प माला विनत

नी वेदनै कुंकमै युक्ता सैंधवी गौर वर्णिका ॥ इति ध्या

नम ॥ अथ भाषा ध्यानम । श्लोक प्रलंब महा वपु ।

भैं॰ रा॰
२

गौर मजे उर फूलन मालन बीना ॥ गीत गिरा गुण नारा
रि गावन चेदन बाहु प्रलेपन कीना ॥ देव प्रसून सगे॰
यि विभूषत पानि त्रिसूल ससैहथि लीना ॥ कोप प्रवे
उ लसै रस वीर सधीर प्रबन्न धरे कर बीना ॥ दोहा ॥
शिव भक्ती रत रागनी धैवत स्वर जहि याम ॥ भैरव॰
की भारया विदत भैंथवी नाम ॥ श्लोक ॥ त्रिसूलपाणि

२

शिव भक्ति रक्षा रक्षोवरा यारन वेधु जीवा प्रचंडको

पा रस वीर युक्ता मा मैंथवी भैरव रागिनीयम् ॥ येव

नोश स्त्रह न्यासे प्रणिवै मैंथवी मना भैरवस्या गनाये

घा दिन यामे त्नी यके ॥ अथ मध्याधीरा लक्षणम् ॥

दोहा । वचनन की रचना निसो पियहिं जनावै को

प ॥ मध्या धीरा कहत हैं ताहि सुमति रस बोप ॥

मैं॰रा॰ ३ यथा कवित्त ॥ तुम काहू करौ काहू काम ते अटकि

परे । तुमै कौन दोस सो तो आपनो ई भाग है । आये

मेरे भौन बडे भोर उठि प्यारे हि तें अति हरवरन ब

नाइ बांधी पाग है ॥ मेरे हि वियोग रहे जागत सक

ल रात गात अरसात मेरो परम सुहाग है ॥ मनहू ।

की जानी प्रान प्यारे मतिराम यह नयनन हिं माह ३

पाईयत अन्न राग है ॥ दोहा ॥ अजहूं उडा वत हों नंही
पीर न होत सुभाग ॥ दौर दौर या भौर के डसे अधर
दल दाग ॥ इति मध्या धीरा लक्षणम् ॥ अथ धृष्ट ना
इक लक्षणम् । दोहा । करै दोष निर संक जो डरै न
तिय के मान ॥ लाज धरै मन मै नंही नाइक धृष्ट नि
दान ॥ यथा कवित ॥ बर जो नमानत हौ बार बार

वर जौं मैं कौन काम मेरे इत मौनमै न आइये ॥ लाज
कोन लेम जग हासी कोन उर मन हसत हमत बड़
वात नव ना ईये ॥ कवि मतिराम नित उठि कल का
न करो निम छाड़ि मोहे कीजे नित बिसराईये ॥ नाके
पग लागो निसि जाके उर लागो लाल मेरे पग लागि
उर आगि न लगाईये ॥ इति धृष्ट नाइक लक्षणम्॥

अथ वीर रस लक्षणम । होय वीर उत्साह मय गौर वर्ण
दुति अंग ॥ अति उदार गंभीर कहि केशव पाय प्रसंग ॥
यथा कवित्त । गति गज राज साजि देहकी दिपति वाजी
हाव रथ भाव प्यादे पांति चल चाल सौं ॥ केसो दास
मंदहास असि कुच भट भिरे भेट भये अति भट भाले
नष जाल सौं ॥ लाज साज कुल कानि सोच पोच भय

मैं॰रा॰ भानि भौंहैं यन्न नानी वानि लोचन विसाल सौं ॥ प्रेमको
५ कवच कसि साहिस सहा इकलै जीति रति रण आज ।
मदन गुपालसौं ॥ इति वीर रस लक्षणम ॥ अथ विनि
योगः ॥ अस्यश्री मैथवी रागनी मंत्रस्य नमरु ऋषिः
उस्निक छंदः ब्रह्मा नारद देवता मैं बीजं मनो कामना
सिद्धयर्थे मैथवी रागनी विनियोगः ॥ अथ कर न्यासः । ५

मैं श्रंगुष्टकाभ्यां नमः ॥ एवं ऱ्हृदयादि सर्वं कुर्यात् ॥

अथ मैंथवी गायत्री मंत्रः ॥ ॐ मैं मैंथव्यै नमः ॥ इति मंत्रः

अथ पूजा विधाय । आसनं पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं व

स्त्रं यज्ञोपवीतं गंधं अक्षतं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं दक्षिणा

पुनराचमनीयम् ॥ सर्वं पूजनं कुर्यात् ॥ जपसंख्या ।

७..... ॥ अथ मैंथवी देवता मंत्रः ॥ ॐ बं ब्रह्मणे नमः ॥

मैं॰ रा॰
६

6

इति देवता मंत्रः ॥ अथ देवता ध्यानम । ॐ ब्रह्मणं रक्तव
र्णाभं पीत वस्त्रै रलं कृतम । चतुर्भुजं चतुर्वक्त्रं सच्छ्रु
वं स्रुचि हस्तकम ॥ अथ मैंथवी रागनी का येह ठाट है
षड्ज सम रहता है रिषभ चढ़ा गंधार उतरा मधम
उतरा पंचम सम रहता धैवत चढ़ा निषाद उतरा
और चढ़ा भी है ॥ अब येह मैंथवी रागनी का गत है

६

अथ सरगमः। धनिसारेगमपधमपगरेसानीध ॥

इति स्थायी। मपधमारेसामगरेसानिध ॥ इत्यंतरा॥

इति अस्थायी अंतर सरगमः॥ अब इसका गत येहहै

२पै २प २म २पै १नि ३सा ३म ३म ३ग ३रे ३सा २नि २प

डिढ डा डिढ डाढा डा डा ढा डिढ डा डिढ डा

२पै २म २ग २रे २म २रे १रे २सै २सै २सै २सै

ढा डा डा ढा डिढ डा डिढ डाढा डा डिढ डाढा

२पै २पै २प २सा १नि मी' २प २पै

डा डिढ डाढा डा डा ढा ॥ यमन अलापः। ननरी

मै॰रा॰ ७

इना आनन उनन उआ नन अद ननरी नने ननाउ

ननना आनरा ननन रनु तानुम ॥ इतिस्थायी ॥ त

नन अद नते आनन नुम् तानुनै नना नन नरी नना

आन तान ननुम् ननु नरीन तानुरी रना नना आन

तान रान ननुम ॥ इतिअंतरा ॥ इतिआलापः ॥

आसावरी आभीरी सिंहली इनके मिलापमें सैंधवी

८

रागिनी भैरवी ताल ४ ॥ ध्रुवपद । परब्रह्मका-

नि रे गा मा पा नि ध पा मा गा रे सा

नेही आदि अंत नहि बल दल नहि जगत बीज परब्र

रे मा पा नि ध पा मा गा रे सा मा

ह्म चेतन नहि व्यापक परवारी ॥ इति अस्थाई ॥ म

पा नि सा गा रे सा नि ध पा मा गा

न वाणी नेत्र बुद्धि दशइंद्रिय दशाहि प्राण सभ गण

मा पा ध नि पा मा गा रे सां

को नहि जनक नवहि रूप सारी ॥ इत्यंतरा ॥

नि सा रे गा मा पा ध पा मा गा रे सा रे गा

जैसे है विस्फुलिंग अग्नि अंत नाहि परे धन प्रवेश

सैं. रा.
८

४

मा पै नि ध पै मा गा रे मा पै नि से गा रे से
करन सकै मूलमई भारी ॥ विधि निषेध वाचक

नि ध पै मा गा मा पै नि ध पै मा गा ध पै
पुन भयौ कहन शब्द कहै बाल निधि जास विना नेह

मा गा रे से
निषेध सारी ॥ इतिआभोगः ॥ रागिनी सैंधवी

नि ध पै मा गा
ताल ध्र रूवपद परब्रह्मका ॥ ऐसेहि अलख

रे से नि से रे गा मा पै नि ध पै मा गा रे से रे गा मा
रूप विद्या वेद सब प्रकाश षट् शास्त्र कथन करै श्रव

पै मा गा रे मा पै नि
वज नव वानी ॥ इतिअस्थाई ॥ एक कहे विस्त

रूप रूद्र सकल कारण हरि ब्रह्मा शिव शक्ति कहें
निज निज मत मानी ॥ अंतरा ॥ और कहें कर्म तें
हि काल एक जानी स्वतः सिद्ध होत सकल येह सभा
बखानी ॥ बाल निधि बेनन नव रूप सकल व्याप
रहो जै विराट रूप गुनेन जानत हैं ज्ञानी ॥

इतिश्राभोगः ॥

सं.ग.
५

9

स
रागिनी सैंधवी ताल ध छटपदी शाकीका ॥ वि

रे ग म प | नि ध प म ग रे स नि स म | ग स म प नि | प
षेभरि उष दमिनी संतन सुख थानी जो सेवे पन म

म म रे स ग रे | म प नि
न कर बांछित फल दानी ॥ इति अस्थाई ॥ राजा इ

स नि स | ग रे स नि ध प | म प नि ध
क रुरथ नाम चक्र वर्नि नीत वेत कोला विथेसो

| प म ग म ग | रे स रे ग म
सेना युद्ध करत मानी । इत्यंतरा । तिह वजीर उ

प नि ध प म ग रे स | नि स म ग स म
ष विन राजा बल हार कियो एकाकि विपन गयो

सैं॰रा॰
९
10

न्याग राजधानी । मोरंगमें वैशणमिला मेथा स्वषि
भेट भई सुन ईश्वरि शरण पर्यो वर्षतीन ध्यानी ॥
डगी तब भई प्रसन्न राजाको राज्य दियो सावर्णि म
नु कियो वैशणकोयो ज्ञानी ॥ तैसेही बाल मिथ्ये
श्रुत केपा करहि सदा दीजो निज प्रेम नेम नियम
न कवि बानी ॥ रागिनी सैंधवी ताल ४ ॥

षट्पदी शक्तीका ॥ जैईश्वरि महालक्ष्मि कोटि सूर्य
तेजपुंज धारिणी त्रेहि सहस भुजा देवन हितका
री ॥ इतित्रस्यार्ई । एक समे देवन सेवा महिषासुर
युद्ध करा हारगये देव सभी हरिहर विसधारि । अन्येन
रः ॥ शंभु तेज वदन भयो विश्नुबाहु ब्रह्मतेज पाद
भये अर्कतेन अंगुलि सम भन्यारी ॥ वसु अन्तकर अं

सै॰ रा॰ ११

गली सहनासिक कौवेरीकौन प्राज्ञापन देंतभये श्र

ग्नि नेत्र मारी ॥ सेघ्याभुव अनिल कान नेज श्रुंजना

रहूप देष देव महिन भये स्तनि कौन भारी ॥ वा

ल निधी गाह्न सभी देवन निज भेट कीये रात्नस

नब मार दिये जै जै भय हारी ॥ इतिश्रीभोगः ॥

रागिनी सैंधवी ताल ४ ध्रुवपद गणेशजी का ॥

उदै प्रभात गौरिनन्दन श्रीगणेश दुःख दमन सेवो

नित लेवो सब हरत विघन सारो ॥ इति अस्थाई ॥

जाके पद सेवन ते देवन की विपद गई सुमरन को

सेत नित भंजन समर महज हारो ॥ इति अंतरा ॥ सक

ल देव सुजन के आठों मैं हि सदा पूजा वक्रतुंड पूज

भै॰ रा॰ १२

न बिन हृया कर्म धारे ॥ एकदंत सुंडि राज बाल
निधी तेरी शरण विघ्नन कौं हर करो दुर्जन को मारो॰

रागिनी भैरवी ताल ४ ध्रुवपद गणेशजी का॰

शिव नंदन वक्र तुंड ज्ञान दृष्टि दाता गायन के प्र
थम काल ध्यान धरो ध्याता ॥ इति स्थाई ॥
तीन ग्राम सप्त स्वरन स्वरना सह मूर्च्छना तान भेद

सम सम उनेवास याता ॥ इत्येनरा ॥ मेहराण षा

डव षन ओडव संकीरण येह चार भांत षटहि राग

मेसर मिलो जाता ॥ श्रीलोकर गायिक जो राग

नायिक ध्यान धरे वाल निधि समझहि भेद मनमे

उप जाता ॥ इतिआभोगः ॥

13

रागिनी सैंधवी ताल ४ ध्रुवपद शिवजीका ॥

हर हर महादेव रटत रहो जब लग घट प्राण दिन दि

न प्रति दैय घटत हृदया रटत नाना ॥ इतिअस्थाई

गंगाधर भस्मअंगा रुंडमाल भाल चंद तीन नयन

चिदानंद करमन शिव ध्याना ॥ इत्यंतरा ॥ देह

गेह दारा सुत कोश वंधु पशु संपद पाप फूट झूल

भै. रा.
१४

14

वड़ कर्त्तन संग हिन ठाना ॥ इह ऊसंग छोड मू

ढ माया भ्रम नरक मूल वाल निधी शंकर भज

मन रूप माना ॥ इति आभोगः ॥ ॥

रागिनी भैरवी ताल ३ ध्रुवपद शिवजीका ॥

शिव शंकर आनंद रटहो मेरी रसना औरर रसन छो

ड सभी जगत की नरसना ॥ इति अस्थाई ॥

जोंको ग्यान नेम करम ध्यान प्रीति रटना करन सक
ल उंग्रव हर संसृति की नटना ॥ इत्यंतरा ॥ चित्र
वरम भूपति कौसी मतिनी नाम रखता सोम वार व
रत धरत निर्जल कर यतनना ॥ तोंको पति दूरि वि
मिल्यो बड्डो गाढ जीवन धुन बाल निधी दंपति
भे मुदित कंज वदना ॥ इत्याभोगः ॥ ॥

सं.ग.
१५

15

प्रि. २

रागिनी भैरवी ताल ४ ध्रुवपद विसजीका ॥

नि सै रे गा मा पै नि ध पै मा गा रे नि सै रे गा मा पै
श्री विस जगन्नाथ रमानाथ भजरे भैर कपट नाहि

नि ध पै मा गा रे सै मा पै नि सै
लपट झूट झमट तजरे ॥ इतिअस्थाई ॥ मोर मुक

गा रे सै नि ध पै मा गा रे सै मा पै नि ध
ट पीतबसन मंद हसन दामनि दुति मेघ श्याम

पै मा गा रे गा रे सै नि सै
शोभित धाम कोनकंज पगरे ॥ इत्यंतरा ॥ शेष

रे गा पै पै नि ध पै मा गा रे सै रे
शैन मधरवैन गरुड गामि कमल नैन भाल तिल

मै॰रा॰
२८
16

कमाल गरे द्रौपदि कील जरे ॥ बाल निधी कृष्ण
निधी चरण शरण धार रहो प्रेम नेम ज्ञान ध्यान
दीजो निज पद रे ॥ इति ध्रुवाभोगः ॥ ॥

रागिनी भैरवी ताल ५ ध्रुवपद विस्नुजीका ॥
पद्मनाभ परमेश्वर सात्विक हित कारी शोभन रू
प श्याम नेत्र पीत वसन धारी ॥ इति स्थाई ॥

मा । पै नि सै गा रे सै नि धै पै । मा गा रे सै मा पै

जो के पद कंज मंजु सेवत नित अधिक हुता मति

धै नि सै । गा रे सै नि । धै पै मा गा रे सै

धनके मानसमें जिनही सदन भारी । इत्यंतरा ।।

नि । सै रे गा मा पै । नि धै पै मा गा रे नि धै

काम क्रोध मोह लोभ अभिमति जिन त्यागा दीनि

। पै मा गा सै नि सै । मा गा रे सै । मा पै नि

उनके हिये रमा अंक हरि पद भय हारी ।। जैसे नि

सै गा रे सै । नि धै पै मा गा रे । सै नि

न करुणा निय बाल निधी हीये बसो पापताप

सै रे । मा गा रे सै

हर करो नरक अरि मुरारी ।। इतिश्रीआभोगः ।।

𑆯𑇀𑆫𑆵·𑆓·
𑇒

fo. 2

रागिनी सैंधवी ताल ४ ध्रुवपद सूर्य्यजीका ॥

उस किरण दिवामणि मम अघ संदन पर सदा गा

नि धार रहो काल रूप सारी ॥ इति अस्थाई ॥ दिन

हिं जात रजिनी छन छन दिनकै साँझ प्रात शिशिर

स्रत छन वसंत कीडा नेहो धारी ॥ इति अंतरा ॥

दीनन तेंहू आश जगत आशा पाश नाहि मिटे माया कर

मै-रा-
१८
18

भूलि करे काल गयो भारी ॥ बाल निधी काल
रूप सदा रहें नैहि प्रबल और भाव बुद्ध बन विस्म
नाश हारी ॥ रागिनी भैरवी ताल ४ फ्रवण
द सूर्यजीका ॥ भास्कर प्रभ तेज रूप जगत
कंज विकसन हिन उदया बल दर्शी दियो घोर नि
मर हारी ॥ इति प्रथमाई ॥ लोक ऽ लोक प्रबल

नि ध पे मा गा रे से मा पे नि ध पे मा

शिखिर रथ जिह गति भारी कर खेमेर मथ वसि

गा मा गा रे से नि ध पे मा गा रे से

सदा गानी धारी ॥ इतिध्रनरा ॥ जेहा जहा दृष्टि

नि से रे गा मा पे नि ध पे मा गा रे से नि से रे गा मा पे

धरे तेहा तेहा वास करे ब्रह्म देव मनुज जीव करत

मा गा रे से मा पे नि से गा रे से नि ध पे मा गा रे से

कन्य सारी ॥ निगम शेष वाल निधे जट नानम

नि से मा पे नि ध पे मा गा मा गा रे से

हर करे प्रति भामति हरपरे दिव्य कला धारी॰

इतिआभोगः ॥

ཀོ་ཁ་
༡༥

19

१ मालवी साखी श्री धयानन्द

२ सुर भैरवै बता मालवी का

३ [illegible] का मालवी का

४ मालवी [illegible] की [illegible] स्वर:

५ भैरव नाथ का मालवी का

मा०रा ॐ अथ मालवी रागिनी प्रारंभः। येह रागि
१ नी मालवी तानसैन के मतानुसार। और
भरतमतानुसार येह रागिनी दीपककी
भी स्त्री कथनकरी है। अरु इसका समय
सायंकाले कहा है। और इसका स्वरूप शिशि
र है। अरु येह रागिनी षाडव कही है ॐ
१

र इसमै पंचमवर्जित कह्योहै ॥ श्लोक ॥ गे

याशेषांशग्रहन्यासे । तृतीयप्रहरात्परम् । गा

नमस्यास्तु मालव्याः । पंचमास्वरवर्जितम

स्मृता मालवी रागिनी कौशिकोविधिः ॥ वभा

मधूवतन्या गौरी । षड्जश्चापि विमिश्रितः

मालवीजायंनेतत्र । मध्यमस्वरमूर्छिना ॥

मा॰ रा॰ भाषा। जब वभास अरु गौरी और पर्ज अरु
२
इनके मिलाप में मालवी रागिनी बनती
है। और इसीकों मारवा कहिते हैं। अरु इ
सके मध्यमकों मूर्छन है। और इसका म
रभी देवता है। अरु सोमऋषि है। और वि
ष्टुपछंद है और मोंबीज है अरु ममस्त। २

इसको विदानायिका है । और इसका अनुकू
लनायक है और इसका शृंगार रस है ॥

अथ मालवी रागिनी मायनम ॥ ॐ अस्यश्री
मालवी रागिनी मंत्रस्य सोमऋषि त्रिष्टुप्
छंदः सरभी देवता मों बीजं मनोवांछि
त सिद्ध्यर्थे मालवी रागिनी जपे विनियो

मा॰ रा॰ ३ गः ॥ अथमालवीरागिनीकरन्यासः ॥ ॐमा
अंगुष्ठाभ्यांनमः । एवंहृदयादिन्यासंसर्वंकु
3
र्यात ॥ अथमालवीरागिनीषोडशोपचारे
णपूजा ॥ आवाहने । आसने । पाद्ये । अर्घ्ये ।
आचमनीये । वस्त्रे । यज्ञोपवीते । गंधे । अ
क्षते । पुष्पे । धूपे । दीपे कर्पूरे नैवेद्ये । ताम्बू ३

ले। दत्तिणा। प्रदत्तणो पुनराचमनीये॥ मो
क्षार्थे प्रणामे॥ अथ मालवी रागिनी मंत्र:॥
ॐ मों मालव्यै नमः ॐ॥ इति मालवी मंत्र:
अथ जप समर्पणं। दक्षालतं दक्षामहसेव
अथ मालवी रागिनी ध्यानम॥ ॐ पीनस्त
नी सुभ्र विलासनेत्रा। नितं बदेशोप्रतिबद्ध

मा॰रा॰ कोदी मालाव बिंदेसरवानुरागो भृत्यानुगा॥
४ मालविका प्रदिष्टा॥ अथ मालवरागध्यान
5 म॥ ॐ नितंबिनी चुंबित वक्त्रपद्मः शुकद्यु
तिः कुंडलवान्प्रमत्तः संगीतशालामविश
न्प्रदोषे मालाधरो मालवरागराजम्॥ अ
थ मालवरागिनी भाषा ध्यानम्॥ पीनड ४

रोज नते अति संदर कांचि नितेविन के ठि
ग साजत ॥ नैनकी सैंनसें य्यातदीये म्हग
मानुष यानुष मोहेको तानत ॥ न्हावपान
न राग वन्यो वनितानसो मालवमाल वि
दौउ विराजत ॥ कानन कुंडल च्छ्रवित
आनन देषतहो मगरो उवभाजन ॥ अ्प

मा॰रा॰ समस्तकोविदानायिकालक्षणम ॥ दोहा ॥
५ समस्त रसको विदा कोविद कहित बषा
नि ॥ जो रस भाव प्रीतमही नाँही रसकी
दानि ॥ कवित्त ॥ देषीहै गोपालएक गोपि
का अनूप रूप सोनेते सलोनी वास सोंधे
तै सहाईहै ॥ शोभा को सभाव अवतार ।
५

लीनो घन स्याम किधौं येह दामिनी यो कामि
नी ह्वै आई है ॥ देवीकोउ दानवीन मानवी
न होई ऐसी मानवीन हाउं भाउं भावती पत
ई है ॥ केशोदास सब साधनकी सिद्धि येह
मेरे जानै मै नंही सों मैनकाकी जाई है ॥
अथ अनुकूलनायक लक्षणम ॥ दोहा ॥ श्री

मा॰रा॰ ६

6

तिकरे निजनारि सों परनारिन प्रतिकूल॥
केशो मन वच कर्मकरि सो कहिये अनुकू
ल॥ सवैया॥ केहूं नंही बिसरै निसि बासर
मंदहसी मुष चंदउज्यारी॥ त्योंही दिपे अति
नेह सों देहकी दीपकली सम दीपति न्या॰
री॥ तेरीये ज्योतिजगे हिये भीतर आवत॰

६

औरन गाति अध्यारी ॥ नैनन हूं अरु वैन
न हूं तन हूं मन हूं को नंही प्रतिप्यारी।
अथ मालवी रागिनी श्रृंगार रस लक्षण।
म। सवैया। आन तिहारी न आन कहे
तनमें कछु आनन आनंही कैसे ॥ केस
व कान्ह सुजान स्वरूप नजाय कह्यो म

मा॰रा॰ न जानन जैसे ॥ लोचन सोभांही पीवन ।
७
जान समान सिहान सुजान न तैसे ॥ जो
न रहान विहान नमै बलिजान सुबानक
हो नेक वैसे ॥ सब मालवी रागिनी की ।
येह बात है ॥ षड्ज सम रहता है सुरु रि
षभ बहुत उतरा और गंधार चडा है सुरु
७

मध्यम उतरा और मध्यम चढा भी लगता
है अरु इसमें पंचम वर्जित कहा है और धै
वत उतरा है अरु निषाद चढा है ॥ अब मा
लवी रागिनी की येह सरगम कही है ॥

नि सा रे ग म नि ध ग म ग रे ग म ग रे सा नि ध
सा रे ग म नि ध म ग रे ग म ध नि सा नि नि ध ।

मगरै ॥ अथ अंतरा ॥ ममयमयमसासारे
नियमयसारेसासारेगमगरेसानियमग
रेसा सासासारेगरेगमगमयमयनि यनि
सारेनियममगरेसानियसासासागगगरे
रेरेममम ययययमयसारेसासारेगमगरे
सानियमगरेसा ॥ इत्यंतरा । अथ आभोगः

ग्राउ कवाउ पराउ उगाण समझाई लगा
ई बनाई दिषाई षाडव राग तान सेम वि
लेविन उपाई सुघाई और सारेग सावी है
न सुघा बुध परकास बनाये दीनि। थम
गरेनिसारेगमनिध ॥ अब मालवी रागि
नी षाडव गतमसीत षानी तालथीमात्रि

मा॰ ग॰ ५ ताला उठेगी हमरी सें मध्यम चढ जाणगा थे

वत ना उतरा ना चढा उतरा मध्यम ग्रह पं

9 चम नदारद ॥ अथ अस्थाई ॥ ^ध^ डा डा डा ^म^ डिड

ग रे ग म ग रे नि रे सै नि सै

डा डिड डा डा । डा डा डा डिड डा डिड डा डा

म ध नि रे नि रे ग म ग रे नि रे

डा डा डा डिड डा डिड डा डा । डा डा डा डि

सै नि सै

ड डा डिड डा डा ॥ अब तोडे चेल स्थाई के ह ५

मेरे मुखड़े के निषाद से तोड़ा चलेगा ।। तोड़ा

म प नि रे गं
डिड डा डिड डा डा । फिर स्थाई में जा मिला

फिर स्थाई के दूसरे मुखड़े के निषाद तक

प नि
बजाई कर दूसरा तोड़ा चलेगा ।। डिड डा

सं रे गं नि प नि रे गं सं प
डिड डा डा । डिड डा डिड डा डा । डिड डा

नि रे गं रे नि सं रे गं गं नि
डिड डा डा । डिड डा डिड डा डा । डिड डा

मा॰ रा॰ १०

रे ग म म सै रे ग म प सै रे
डिड डाडा। डिड डा डिड डाडा। डिड डा डिड

ग म नि प म ग म सै नि प
डाडा। डिड डा डिड डाडा। डिड डा डिडा।

ग म रे नि प ग म ग रे नि
डाडा। डिड डा डिड डाडा। डिड डा डिड।

प म प नि रे ग म प नि सै
डाडा। डिड डा डिड डाडा। डाडाडा॥ फि

र नीचे के निषाद के नेडे में जा मिला॥

इति अंतरा॥ अथास्था मालवी अलापः॥ १०

२सा २रे २ग २म २नि २ध २प २म २ग

ननरी इना आनन उनन उआनन् आदतनरी

२रे २सा २नि २ध २नि २सा २रे २ग २नि

ववे तना उननना आनरा ननन आदनवे

२रे २ग २रे

रव तानुम् ॥ इति अस्थाई ॥ अथ अंतरा ॥

२ग २म २ध २नि ३सा ३रे ३सा २नि २ध

ननन अदनवे आनन नुम् तानुवे तना त

२नि ३सा ३रे ३नि ३रे ३सा २नि

न नरी नना आन तान तनुम् ननु तरीन

२ध २प २ध २म २नि २ग २रे २ग २म

तानुरी रनु नना आन नान आन तान रान

मा॰रा॰ ११

२ग २३ २हि

नतुम ॥ ग्रथ मालवी रागिनी ध्रुवपद गान

माह ॥ रागिनी मालवी ग्रलाजीकी ख्रतेः

ध्रुवपद ताल ४ ॥

११

अथ मालवी रागिनी ब्रह्मपरिछेदमाह ध्रु

२सा २रे २सा २नि
वपद ब्रह्म ताल तीन ॥ तेही सकल ज

२प २नि २म २ग २रे २सा २रे २ग २म २ग
गत को करण हार ब्रह्मादिक नाहिन प

२रे २सा २म २प २नि २सा
रत पार ॥ इति स्थाई ॥ नभ वायु अनल

२रे २सा २नि २प २म २ग २रे २सा
जल भूमि थावर नर नारी पशु पंछी संचार ॥

२सा २रे २रे २सा २नि २प
इति अंतरा ॥ चेतन ता तेहि जग व्याप

२म २नि २म २ग २रे २ग २रे २सं २म

मा॰ग॰ रहो अब अलख रूपहैं निरविकार ।। निर्गु

२प २नि २सं २रे २सं २नि २प २म

ण निःशेशाय नित पुराण चिदानंद अवि

२ग २रे २सं २सं २रे २सं २नि २प

नाशी सार ।। नाम रूप बिन सकल समा

२म २ग २रे २म २ग २म २ग २रे २सं २म २प

जी बाल बुद्धि कैसे तोहि पार ।। किरपाक

२नि २सं २रे २सं २नि २प २म २ग

रो ज्ञान निज अनुचर महि जल हेतव प

२रे २सं

ग उर धार ।। इत्याभोगः ।। मालवी रागिनी

२ग २म २प २नि

ध्रुवपद बल ताल चार॥ तेही बीज जगत

२सं २नि २प २सं २म २ग २रे २सं २नि

तत माया को ग्राल ब्याल बामन को उद

२प २नि २सं २ग २रे २सं

क करें विविध रूप धारें॥ इतिस्थाई॥

२म २प २नि २सं २रे २सं २नि २प २प

धर्म मूल वेद भुजा शाखा ग्रह दश पुरा

२म २ग २रे २सं २नि २प २नि २सं २म २ग २रे

ण यज्ञादिक कर्म कुसम मोक्ष फल स

२सं २ग २म २प २नि २सं

धारें॥ इतिअंतरा॥ उदक धार बारबार

मा॰रा॰ शावलता पात पीहल युक्त मुक्त बालनि
२३ धी बीज रूप धारे ॥ दीन बंधु तेरि दया धा
13 रे जब परम सुफल दिन दिन प्रति वृद्धि
शील निजहिं भाव विचारे ॥ इत्याभोगः
इति मालवी रागिनी ख्याल परिच्छेदः ॥ ॥

अथ हेमकारी रागिरी मालवी शक्तिपरिछे

२ग २रे २सा २रे

दमारु ध्रुवपद ताल चार ॥ श्री दुर्गा दुर्गति

२म २ध २नि २ध २म २ग २रे २प

द्राव हर करण शील जास पास रहे माल

२म २ग २रे २सा २म

पुंज असुर नाश कारी ॥ इतिस्थाई ॥ केह

२मध २नि २सा २ग २रे २सा २नि २ध २म

रके षष वरी फरी स्राय पाश शूल शोव च

२ग २म २ग २रे २ग २म २ग २रे २सा

क बाण गदा कोडि कलिश धारी ॥ इतेतरा

२ग २रे २सा २रे २प २म २ध २नि २ध २प २म २ग २रे

मा॰रा॰ अक्षमाल परशु धनु दंड शक्ति चर्म यशक्ति

२प २ध २म २ग २रे २ग २रे २सा

२४ पद्म खड्ग सुरा पात्र घंटा कर भारी ॥ ॥

२म २ध २नि २सा २ग २रे २सा २नि २ध २म २ग

14 महिष आदि राक्षस गण चूर करण चरण

२रे २सा २म २ग २रे २सा २ग २रे २सा

नाम बालनिधी ध्यान धरे हृदे धीर मारीः

इत्याभोगः ॥ मालवी रागिनी ध्रुवपद शा

२ध २म २ग २रे २प

कि ताल चार ॥ सुरमति के चरण कंज॰

मेज विशद ध्यान धरो यावक कर रक्त क

विर शोभित नाव बारै ॥ इतिस्थाई ॥ श्वे

ताम्बर धारिणि नित हंस गमन कारिणि

वर अभय दान पुस्तक कर वीणा रव स

धारै ॥ इतिअंतरा ॥ सम सरन सोय सोय

नीकि तान लाग डोट मूर्छनकी मींड।

२ध २म ग २रे २सं २म २प २नि २सं २रे २सं

मा॰ रा॰ धेंकरांग रूप थोरै ॥ श्रवण करत जीव भ

२नि २प २ध २म २ग २रे २सं २नि २प २नि २सं

ये हृषद रूप हृषद द्रवे वैमेंही वालनिये।

२म २ग २रे २सं

प्रेम रूप चोरै ॥ ॥ ॥ ॥ इति आभोगः ॥

इति मालवी रागिनी शक्ति परिच्छेदः ॥

अथ मालवी रागिनी गणेश परिछेदमाह

ध्रुवपद गणेश ताल चार ॥ गौरि अंग जा

त भात भाल तिलक नाग जात अंगराय ।

दलन करण भरण भक्त भारी ॥ इति स्थाई

कलपत निधि चतुर्थि करहि बरत पुरष

त्रिया अर्चन कर गणप निमें अर्ध चंद्रधारी

२ग २म २प २ध २नि २सं २नि २ध
मा॰ गा॰ इति श्रेतरा ॥ मनोभीष्ट सकल सिद्ध हेत से
२प २म २ग २रे २सं २नि २ध २नि २सं २म
२६ पद विविध बुद्धि होइ तिसे नसें सकल दु
16
२ग २रे २स २म २ध २नि २सं २रे २सं
शमन पद चारी ॥ श्री गणेश परम वरद॰
२नि २ध २प २म २ग २रे २स २ग २म २ध
बाल निधी तेरि शरण चरण युगल धार
२प २म हो २ग २रे २स
रहों प्रीति मारी ॥ इत्याभोगः ॥ मालवी रा
२ग २म
गिनी ध्रुवपद गणेश ताल चार ॥ प्रतिको

२प २म २ग २रे २प २ध २नि २ध २प २म २ग
मल विमल ख्रेउ कपिल वर्ण एकदंत उ
२रे २स २ग २रे २स २नि २स २ग २रे २स
मा ग्रेक केलि करत हरत दुःख जगरे ॥
२म २प २ध २नि २स २रे २स
इति स्थाई ॥ जननि गर खेडि थैरें फणिव
२नि २ध २प २म २रे २प २ध २नि
त फणि ऊबि करैं मनहि शोभ रूप पेषि
२ध २प २म २ग २रे २स २ग २म
विहस वदन मगरे ॥ इति स्थाई ॥ पुनहि
२प २म २ग २रे २स २ग २रे २स २नि २स
ञुनरि लीन कीन शोभ शिखर ख्रवण कु

मा॰ गा॰ मम प्रेज दीन उमा नृप कीन चित्र अगरे॰

टेघ बाल केलि उमा शोभ मगण मुदित ॥

भये प्रेक लाये बालकार्य सिद्ध करै विग

रे ॥ ❖ ॥ इति आभोगः ॥ ❖ ॥ इति मालवी

रागिनी गणेश परिच्छेदः ॥ ❖ ॥❖

अथ मालवी रागिनी विस्त्रपरिछेदमाह

२म २ध २प २नि

ध्रुवपद विलं: ताल चार ॥ पतग छष।

२ध २नि २प २ध २म २ग २रे २म २ध २प २नि २प

गामि दामि भक्त परम धर्म डष्ट मर्म भे

२ध २म २ग २रे २ध

दि चक्र धारि जग विहारी ॥ इति स्थाई।

२म २प २नि २ध २रे २ग २रे २ध २नि २प २ध २म

गौरिबमन मेटहमन चमकटमन मोह

२ग २रे २म २ध २प २नि २प २ध २म २ग

करै रतन जरत मकट मालतिलक वि

८८

18

मा॰ रा॰ रधारी ॥ इतिध्रुवका ॥ अष्टभुजा गरुड ध्व
जा वैजेंती कुसम माल कर कंकण युग
ल वज्र त्रिचित्र धारी ॥ शंख चक्र गदा॰
पद्म धनुष खड्ग चर्म बाण धारी द्विष्ट
मारि बालनिध ग्रनेद कारी ॥ इत्याभोगः
मालवी रागिनी ध्रुवपद विश्र: ताल चार

वि

ध्यावो निज हृदय कमल विचक माहें ।
रमारमण विमल ताप हारि कलाव हर
करण सारी ॥ इति स्थाई ॥ सूर्य बिंब म
ध्य वर्ति चंद्र बिंब ध्यान धरो करो ध्यान ।
ल मध्य स्वर्ण सिंहासन भारी ॥ इत्यंतरा ॥
तापे हरि रूप अनूप श्याम धाम बनमें

२प २म २ग २रे २स २नि २स २ग २रे

मा·रा· जा शेष चक्र गदा कमल धारि सद विहा

२स २म २प २ध २नि २स २रे २स २नि २ध २प

२२५ री ॥ कर श्रेष्ठ मात्र पात्र अभय तास म

२म २ग २रे २म २प २ध २प २म २ग

19 नजुरी पूर्ण काम बालनिधी वरण धार

२रे २स

ण धारी ॥ इत्याभोगः ॥ इति मालवी रा

गिनी विलम्पति भेदः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

अथ मालवी रागिनी शिव परिछेद माहत्म्य

२म २प २ध २नि

वपट शिवजी ताल चार ॥ पंचानन उमा-

२ध २प २म २ग २रे २प २म २ग २रे २स

नाथ साथ नाम प्रमथ प्रबल विविध भांत

१नि १ध १नि २स २ग २रे २स

किल किलात वृषभ यान चारी ॥ इति स्था-

२म २ध २नि २स २रे २स २नि २ध २प

ई ॥ त्रिपुरगण के हनन हेत उद्यत हो धाई ।

२म २ग २स १नि १ध १नि २स २ग २रे २स

गण नंदि भृंगि भैरवादि कर त्रिशूल धारी ॥

मा॰रा॰ इतिश्रेतरा ॥ केते गण ग्रम्ख वदन नक्र ल

पन ष्यानमवी घनि त्रेच क्रोड वदन कद

न करणमारी ॥ मेनासमभविश्रमित्र मंगलि

यें त्रिपुर हने यने डः ख हरकरो बालद

या कारी ॥ इत्याभोगः ॥ मालवी रागिनी

ध्रुवपद ताल ४ ॥ कर त्रिशूल डमरु ।

थैरै हरै पाप जगत ताप साप गरल गले प

रै मदन बदन देवा ॥ इति स्थाई ॥ गंगाधर

ईड शिखर सित विभूति तनु हि थैरै हैड ।

भाल नयन भाल शोभ अलष भेवा ॥ इति

अंतरा ॥ वाम अंग उमा बदन मदन कोटि

भेद करण पूर्ण वेद गोवि परण अवण भर

मा॰रा॰ ण पेवा ॥ हैमावति ग्रेगलीन कीन सदि

र बभ्रु वर्णि दामिनि घृत बालनिधी ग्र

ति ग्रनेद पेवा ॥ ॥ ॥ इतिआभोगः ॥

इतिमालवीरागिनीश्रिवपरिच्छेदः ॥

अथ मालवी रागिनी सूर्यपरिछेदमाह ।

२ग २म २प २नि २प

ध्रुवपद सूर्य ताल चार ॥ विपति गमन

२ध २म २ग २रे २ग २म २प २ध २म २ग २रे

कारि हारि तिमर जगत ध्यान करन नि।

२सं २नि २प २नि २सं २म २ग २रे २सं

न भक्तन पाप हरत दर्श देत नितरे ॥

२म २ध २प २नि २सं २रे २सं २नि

इति स्थाई ॥ जांबूनद तप्तवर्ण पीतवस

२प २ध २म २ग २रे २ग २म २ध २म २ग २रे २सं

न जरी युक्त धारण कर कमल जगतक

२नि २प २नि २ग २रे २स २ग २म २प
मा·रा· र शदछ विचरे ॥ इति श्रेतरा ॥ कमलासन

२नि २प २ध २म २ग २रे २ग २म २प २ध
कमलनयन समबीति यानचढि पढि ।

२म २ग २रे २स २नि २प २नि २स २ग २रे २स
बेद रथ सचक्र पुनहि निकर विचरे ॥

२म २ध २प २नि २स २रे २स २नि २प २ध २म
सनत सनत याज्ञवल्क बेद जगत श्रग

२ग २रे २ग २म २ध २म २ग २रे २स २नि २स
ट कहो बालनिधी स्वकसम्रह मायादि

२ग २रे २स
न प्रचरे ॥ इत्याभोगः ॥ मालवी रागिनी

२२
८२

२८

ध्रुवपद सूर्य ताल चार ॥ जग व्यापी नय
न देव सेवन कर सचर ग्रुकघ उधहि सं
यम स्नान साय राय नयन स्वामी ॥ इति
श्याई ॥ सूर्य ह्रदय पाठ पठन कर उ
चार मेघ धार रक्त गंध उदकयुक सर्वउ
दित दामी ॥ इति चेतरा ॥ जानदेकभूमि

मा॰ रा॰ दृष्ट कर अंजलि ध्यान निष्ट रुक कुसम ग्र
२३ छत ग्रत सदा सान कामी ॥ नीह जना दे
ह गेह संपद कर युक्त रहे करे बालनि युग
सोई जग अंतर यामी ॥ इति आभोगः ॥

इति मालवी रागिनी स्वर्ग परिच्छेदः ॥

अथ मालवी रागिनी दशावतार परिछेद

२ध २म २प २ध २म

माह ध्रुवपद ताल चार ॥ जगदीश्वर प्रणि

२ग २रे २ध २म २प २ध २म २ग २रे २सा २प २सा २ग

प्रभु धर्म कर्म रक्षपाल सानिदेष भेषध

२म २ग २रे २सा २म २प

रै हरै पाप मगरे ॥ इतिस्थाई ॥ मछ क

२नि २सा २रे २ग २रे २सा २नि २प २ध

छ कोड फोड विभमये नरहरि बालप्रह

२म २ग २रे २सा २सा २म २ध २ग २रे २सा

लाद रछन कर हेमाकिशिप रगरे ॥ इति

मा॰रा॰ श्रेतरा ॥ वामन वपु परशु धारि भार्गव प

२४ ति रामचंद्र सीताके हेत हन्यो दशाकंदर॰

२५ जगरे ॥ कृस्नाग्रज द्विविध हन्यो बुद्ध प्र

गट ब्रह्म भन्यो कल्कि होइ बालनिधी

हरे पाप नगरे ॥ इति आभोगः ॥ इति मा

कल्याण ॥

लवी रागिनी दशावतार परिच्छेदः ॥ ॥ ❖

अथ स्वरसागर परिछेदमाह ताल। । रूपनविचा

श्रीरणवीरकृत राग विभास ताल. २प २नि २सं २रे २नि २प

र। रागसारंग। सूरदासकृत ॥ श्रीसबकेके सुन व

२धं २प २नि २प २धं २म २धं २प २ग २रे २सं २प

वन रूपलागयौ करन विचार। झूठेनाते जगतके

२नि २सं २ग २म २प २म २प २नि २सं २रे २ग २सं

सुत कलत्र परवार। चलतन कोऊ संगचलै मो

२नि २प २धं २प २ग २रे २सं २प २सं २सं २ग २म २प २धं

सिरहै सुषनारि। आवन गाढे काम हरि देष्यो सू

राग सारंग सूरदासकृत सरगाम॥ सरेमपधनिधपमरेसनिधनिसरे॥ मधनिसरेस

निधमरेमधनिसरेसनिधमरे॥ मधनिसरेसनिधमरे॥

२म २प ता·३
वि·रा· रविवारि २८ विश्रामरागगमा॥ सूरदासकृत। रागगू

२स २नि २प २ध २ग ध २प २ध
सू· जरी। ताल। । हरि बिन कोऊ कामन आयो ॥

२ग २रे २स २नि २स २ग २रे २स २ध २म २प २नि २स २नि २प २ध
धामकूट माया प्रपंचलगि रतन स्वजनम गवायो

२ग २रे २स २नि २स २ग २रे २स २ध २म २प २नि ३स २नि
कंचन कलस विचित्र चित्र करिरचि पचि भवनव

२प २ध २ग २रे २स २नि २स २ग २रे २स २ध २म २प २नि
नायो। तामेंनेनेहि छिनही काढ्योपलभरिरहि

रागगूजरी सूरदासकृत सरगम॥ गरेसमगरेस ॥ मधनिसनिधपमग
रेसनिधगरेस ॥ मधनिसनिधपमगरेसनिधगरेस ॥ मधनिसनिधप
मगरेस

२सा २नि २ध २प २ग २रे २सा २नि २सा २ग २रे २सा २प २म २ध २नि
ननपायो । होतेरे मेगाजरोड़ यहै कहि नियाधन
२सा २नि २प २ध २ग २रे २सा २नि २सा २प २म २ध २म २ध २नि
यनि छायो । बलन रही बिन बोर मोर मघ पक
२सा २नि २ध २प २ग २रे २सा २नि २सा २प २म २ध
न पग पङ्चायो । बोलि बोलि सब बोलि मित्रनि
२नि २सा २नि २ध २प २ग २रे २सा २नि २सा २ग
न लीनो सोजेहि भायो । यहौं काम श्रेनको ब
२रे २सा २प २म २ध २नि २सा २नि २ध २प २ग २रे २सा २नि २सा
रियो तिनही श्रानबेपायो । श्रासाकरि करि
नियगरेस ॥ मधनिसनिधपमगरेसनिधगरेस ॥ मधनिसनिधपमगरे
सनिधगरेस ॥ मधनिसनिधपमगरेसनिधगरेस ॥ मधनिसनिधपमगरे
सनिधगरेस ॥ मधनिसनिधपमग

वि·रा·
सू·

२ग २रे २सां २म २प २नि २सां २नि २प २धं २ग २रे २सां २नि

जननी जायौ कोट कलाउ लडायौ । तोरलियौ कदि

२सां २ग २रे २सां २म २प २नि २प २धं २ग २रे २सां २नि २सां २ग

हूं कौडैरा नापर वदनजरायौ । पतितन उधार नगान

२रे २सां २धं २म २प २नि २सां २नि २प २धं २ग २रे २सां २नि २सां २ग

का तारन सोमैं सठ विसरायौ । लियो न नाम नैक

२रे २ग २रे २धं २प २नि २सां २नि २प २धं

ताल तीन॥

हूं योंवै सूरदास पछितायौ ।२४। विभास रागस्य

सूरदासकृत ताल । । सूरसागर रागदेवगंधार

रेसानिपगरेस ॥ मपनिसनिपधमगरेसनिपगरेस ॥ मपनिसनिपधम
गरेसनिपगरेस ॥ मपनिसनिपधमगरेसनिपगरेस ॥ इतिसरगमः॥

३सं २नि २प २ध २म २ध २प २म २ध २ग २रे २सं १नि

सकल तजि भज मन चरन मुरारि । स्रुति स्मृति

२सं २ध २म २प २नि ३सं २नि प २ध २ग २रे

मुनि जन सब भाषत मैं हू कहत पुकारि । जैसो स

२सं १नि २सं २ध २म २प २नि ३सं २नि २प २ध २ग २रे

पनो सोय देखियत तैसो यह संसार । जात बिलय

२सं १नि २सं २म २ध २प २नि ३सं १नि २प २ध २ग २रे २सं

कैं छिनक मात्र मैं उघरत नैंन किवार । वारंवा

१नि २सं २ध २म २प २नि ३सं २नि २प २ध २ग २रे २सं १नि २सं

र कहत मैं तोसौं जन मन ज्वाहार पीछैं भई सम

रागदेवगंधार सूरदासकृत सरगम ॥ मगरेमपधपधपमगरेस ॥ मपनि
सरैसनिधपमगरेस ॥ मपनिसरैसनिधपमगरेस ॥ मपनिसरेसनिधपम
गरेस ॥ मपनिसरैसनिधपमगरेस ॥ मपनिसरैस ॥

वि॰ रा॰
सू॰

२धि २म २प २नि २सं २नि प २धि ता॰ तीन॥
ईस्वर ब्रम्ह अजहूं स्वरन संभार ।३॰। विभास रागस्य

२सं २नि २प
सूरदासकृत ताल। ।रागगूजरी॥ अजहूं सा

२धि २प २धि २ग २रे २सं २नि २सं २धि २म
वधान किन होई। माया विषम भुवंग निको

२प २नि २सं २नि २प २धि २ग २रे २सं २नि २सं २धि २म
विष उतरयौ नाहीं तोई। कृष्ण सुमंत्र जीवन

२प २नि २सं २नि २प २धि २ग २रे २सं २नि २सं २धि
मूरी जिन जनमत जिवायो। बारंबार निकट स्रु

नि ध प म ग रे स॥ राग गूजरी सरगम॥ म ग रे ग रे स॥ म ध नि सं नि ध प म
ग म ग रे स॥ म ध नि सं नि ध प म ग रे म ग रे स॥ म ध नि सं नि ध प म ग रे॥

3

३

वननिंकौ रामगाकहु सुनायो । भौनक देहजीयभ्र

मि मानी देषनसी उसव लायो । कोउ कोउ उवरो

साधसंग जिन रामस जीवन पायो । जाकौ मोहमे

र भ्रमि छूटै सुजस गीतके गाये । सुख मिटै भ्र

ज्ञान मरको ज्ञान मरके घाये ॥ ३१ ॥ विभास वा

मगरेस ॥ मपनिसनिपपमगरेमगरेस ॥ मपनिसनिपपमगरेमगरेस ॥

मपनिसनिपपमगरेमगरेस ॥ मपनिसनिपपमगरेमगरेस ॥ ❖ ॥

वि॰ ग॰ सू॰

२प
गस्य सूरदासकृत ताल। ।रागकेदारा। नमो

२पं २म २ग २रे २सं २म २प २नि ३सं ३रे ३सं २नि
नमो करुणा निधान। चित वन कृपा कटाक्ष निहा

२प २पं २म २ग २रे २सं २म २प २नि ३सं ३रे
री मिट गयो तम अज्ञान। मोहति माको लेस रहेौ

३सं २नि २प २पं २म २ग २रे २सं २म २प २नि ३सं ३रे ३सं २नि
नही भयो विवेक विज्ञान। आत्मरूपसकलपदद

२प २पं २म २ग २रे २सं २म २प २नि ३सं ३रे ३सं
रसो उदय कियो रविज्ञान। मैमेरी अवरहीनमन

रागकेदार सूरदासकृत सरगम॥ मपपपमगरेम॥ पमपनिसनिपपमम गरेम॥ पमपनिसनिपपमम गरेम॥ पमपनिसनिपपमम गरेम॥ ४

२नि २ध २पं २म २ग २रे २सां २म २ध २नि २सां २रे २सां २ध
मै छूटो देह अभिमान । भौवै परी आजही यहन
२पं २म २ग २रे २सां २म २ध २नि २सां २रे २सां २नि २ध
न भावै रहै अमान । मेरे जिय अब यहै लीलासा
२पं २म २ग २रे २सां २म २ध २नि २सां २रे २सां २नि
लीला श्रीभगवान । श्रवण करौं निस वासरहि
२ध २पं २म २ग २रे २सां
नसो सरनि हारी आन । २२ विभास रागस सुर
सागर । ताल । । रागसारंग ॥ कह्यौ सुक
सुनो परी छिन राउ । ब्रह्म अगोचर मन बांनी

वि॰रा॰
सू॰

तै अगम अनेंतनि प्रभाव । भक्त निहित अवतार धा
रजो करो लीला संसार । कहो नाहिंजै सूनो विन
दैकै सूरनैं रे सोपार ।३३। विभास रागस्य सूरसागा
र नाल । ।राग विलावल ।। नारद ब्रह्मा कों सि
रनाइ । कह्यौ सूनो त्रिभुवन पतिराइ । सकल सृष्टि
यह तुमतें होइ । तुम सम दुतिया और न कोइ ।।

५८

तमहू धरत कौन कौ ध्यान । धरनन को सो कहौं व
खान । कहौं कर्ता हर्ता भगवान । सदा करत मैं ति
न को ध्यान । नारद सो कहौं विधि जा भाइ । सूरक
हौं मौंही सकगाय ।३५। विभास राग सू रसाना
र ताल । । राग धनासिरी ।। जो हरि कौ मो से
इ करना राम हरी । ज्यौं दर पन प्रति विंब त्यौ सब घट

वि॰ग॰ ष्टिकरी। आदि निरंजन निरंकारको ऊ ऊनो न हसर।
स॰ रवौसृष्टि विस्तार भई इच्छा इक सौसर। त्रिगुणाप्रकृ
6 तते महतत्व महंतत्वते अहंकार। मन इंद्री सद्मादि
पंच ताते केये विस्तार। सद्मादिकते पंचभूत सुंदर
प्रगटाए। पुनि सबकों रचि पैठ आपमें आपसमा
ए। तीन लोक निजदेहमें राषै करि विस्तार। आ ६

दिपुरुष सोई भयौ जो अक्ष अगाम अपार । नाभ कमल ते
आदि पुरुष सो कौं प्रगटाइउ । षोजत जुग गए बीत ना
ल कौं अंत न पायौ । तिन सो कौ आज्ञा दई रच सब स्रष्ट
उपाइ । स्थावर जंगम सुर असुर रचे सबै मे आइ । मछ
कछ वराह बहुरि नर सिंघ रूप धरि । वामन बहुरो पर
सुराम उनि राम रूप धरि । वासुदेव सोई भयौ बौध उन

वि·गा·
स्त:

भयौ न कोई । सोइ कल्की होइगौ और न दुतिया
कोई । पद दस हूं अवतार कहौं अन और चतुरदस
भक्तवछल भगवान पैरवस भक्तन के वस । अज
अविनासी अमर अभंजन मै और न सोई । नटवर क
ला कैरै सकल बूझै बिरला कोई । सनकादिक
व्यास वड्डर भये हेरत रूप हरि अति नारायण शिव

भदेव वऊगौंज यग्येस्वर । दत्तात्रेय अत्रिजत्त अकषवऊ
रौं पृथुवपु धरि । कपिल मोहनीयह ग्रीवकै कियो
ध्रुव श्रव नरि । भ्रमरैन कोऊ गनै श्रौ नक्षवन सुनावै
कहैा वहै अवतार अंत सोऊ नही पावै । सूर कहै
को करि सकै जनम करम अवतार । कहे कछुक
गुरु कृपा तें श्री भागौ तनुसार २५ ॥ विभासराग

वि·रा· सूरसागर नाल। । रागबिलावल । ब्रह्माय्यौ नार
सू· दसौं कह्यौं । जबमैं नाभ कमलतें भयौ । योजन नाल
8 कीनो जग भयौ । तौहूं मैं कछु मरम न लयौ । भई आ
कास बानी तिहिं बार । न्हूये बार साल कविचार । ३
न्हैविचार ज्ञैहैज्ञान । ऐसी भांनकह्यौ भगवान ब्रह्माज
नारदसौं कह्यौ । व्यास सोई नारद सौं लह्यौ । व्यास सो ८

कहीये सोसो विस्तार । भयो भागवत या परकार । सो
इमै श्रवनमसो भाषो । तेरे हृदयन मेंसपराषो । सूल
भागवत कोपई चारि । सबविधि भलीइनै विचारि ३८
विभास रागसूरसागर ताल । । चतुरश्लोकी
भागवाका । रागकान्हरा । पहिलैहोंहीहोनवएक
अमल अकल अज भेद विवर्जित सुनविधि विमल

वि॰ष॰
सू॰

9

विवेक। सोएक अनेक विधिसोभत नानाभेष। पा
केसरन यरागयेंतेंहीं रहिहैं अब सेष। फूटी सोची
सीलयै मम माया सो जान। रवि ससि राड संजोग
बिन ज्यौं लखित मसमाति। जैसे गगजि बसि फटक
मय पेव प्रपंच प्रम्हत। ऐसेंसे सबहिन सोम्पासौं म
नि ग्रेथिन ज्यौं सुन। पहिले ज्ञान विज्ञान पढ़लमी

य भक्तको भाव । सूरदास सोई समरथ करि ग्रहिहे
हि विन लाव ३१ ॥ विश्राम सागरस सूरसागर
माल । ॥ राग विलावल ॥ हरि हरि हरि हरि
सुमरन करौ । हरि चरनार विंद उर धरौ । शुक दे
व हरि चरनन चित लाइ । राजा सौं बोल्यो या भा
इ । करो हरि कथा सुनो चित लाइ । सुनन सौं हरि

वि॰ रा॰
सू॰

10

केशनगाइ । १ विभास रागासु सूरसागर ताल । ॥

बिदुर मैत्रेय संवाद । राग बिलावल । नवनृहरि भये

प्रेम ध्यान । कहि ऊधौ सौं नव विज्ञान । कहौं मैत्रे

सौं समझाई । यह नम बिदुर रहि कहियौ जाइ । बद

रिका आश्रम दोऊ मिल जाए । तीरथ करत गए श्रऊ

लाई । ऊधौ बिदुर नहां मिल गए । दोऊ हृसल प्रेम बस

भए । उधो कह्यौ हरि कालौं ज्ञान । कहिहौ तुम्है मैत्रे
ज्ञान । यहि कहि ऊधो आवे चले । विदुर मैत्रे वहूंां मिले
जो कहि हरि सौं सुनियो ज्ञान । कह्यौ मैत्रेय ताहि वषा
न । सोई मोहि दियौ व्यास समझाइ । कहौं सु सूरत ख
नो वितलाइ । २ । विभास रागस्य सूरसागर माल
विदुर जन्म वरनन । राग विलावल ॥ विदुर सहपर्मराइ

वि॰ रा॰ मू॰

भवतार । जौं भयो कह्यौ सुनो चितधार । मोहि वरषज

बसूली दियो । नवसो काट कसौंकै गयो । सोउ बपुर

मराइपै आयो । क्रोध बैन यह वचन सुनायो । कोनप

पमै अैसो कियो । जाते मोकौ सूली दियो । धरमराज

कह्यौ सुनो चिष धार । छमा करौ तौ देऊ वताइ । बाल अ

वस्थामैं तुमधाइ । उडत भंभीरी पकरी जाइ । ताहिसू

११३

न पर म्हलीदियै। नीकौं बदलै नमसौं लियै। विष

कसैं बाल दसा अज्ञान। भयै पापमोनैं बिनु जान। बा

लापन को लगानन पाप। नीने मैं नमैं देहु सराप॥

दासीसुत होऊन जाइ। सह बिदुर भयै सोयाभाइ।३

विभासरागास्य भवसागर नाल।   । सनकादिक

अवतारवरननं॥ अहलाअलभूपउरधार। मनसौ

वि॰ रा॰ प्रगट किये सुत चार। सनक सनंदन सनातन कु-
मार। वहुर सना तन मये चारि। पखारो जब ब्रह्मा
किये। हरिको ध्यान पलौं तिहिं हियौ। ब्रह्माकरौ
हरिहि बिलखौ। उनयह बचन हृदयनहि धारौ।
कह्यौं यहै हम तुमसौं कहौं। पांच वरषके नितही
रहैं। ब्रह्मातिनिहिं सो यह वर पाइ। हरि चरननि वि

१३

न राष्यौ लाइ । शुकदेव कह्यौ जैसै परकार । सूरकै रै
नैरी मन सार ।४। विभास रागस्य सूरसागर नाल
रुइ उरपति । राग विलावल ॥ सनकादिकन क
ह्यौं नहिं मान्यौ । अत्ता क्रोध वउन मन आन्यौ । नवर
क करुष भौंइनै भयौं । होन समैं नेहिं रोवन दयौ ।
नासनाम विधि रुइ सराष्यौ । ताको हृदयिकरन

वि॰ रा॰
सू॰

कौभाष्यौ । तिनवड सहि नामसी करी । सोना समक
रि मन अनुसारी । वलामनमो मलीन भाइ । सूरसहि
नव श्रौर उपाइ ५ विभास रागस्य सूरसागर ताल
समरिषवारिसनिउनाल । राग विलावल ॥ अस्नाम
मिरन की हरिनाम । प्रगट किये रिष समभिराम ।
स्टगामरीव श्रेगिरा वसिष्ट । अति उलक अनभयो व

13

लक्ष । इन दक्ष और प्रजापति भए । स्वयंभू आदि वारिस
निजए । इनतें उपजी स्रिष्टि अपार । सूर कहै सो लोक कहै वि
स्तार । ६ । विभास रागस सूरसागर नाल । । सूरश्र
सूर उसनि राग विलावल ।। ब्रह्मा रिषि मरीचि निर
मायौ । रिषि मरीचि कश्यप उपजायौ । सूर गुरु शुभ
र कश्यप के पुत्र । भाति विमान आपमै मत्र । सूर हरि

वि॰रा॰ सु॰

भक्त ग्रन्थ हरिदासही। सुर मत छुमी अम्बर अनको
ही। उनमें तिन उठि होइ लराई। कौ सुरनकी होस
सराई। जिहिहिते जोजो किये अवतार। कहो सु
रभागौन अनुसार ॥२॥ विभास रागस सुरसागर
नाल। ॥ बारह अवतारवरननं। रागविलावल
बलातें स्वयंभू मन भयो। तासो सृष्टि करनसो कह्यों

१४

नित ब्रह्मासो कहै सिरनाइ । सृष्टि करौ सब है है कि
हिं भाइ । ब्रह्मा हरि पद ध्यान लगायो । तब हरि व
पु वराह धरि आयौ । कै वराह पिरथी ज्यौं ल्यायौ
सूरदास सकल्यौ ही गायौ । ८ । विभास रागस्य
सूरसागर ताल । । राग धनाश्रिरी ।। हरि
गुण कथा अपार पार नहि पाईयै । हरि सेवन

वि॰रा॰
ह॰

सुध होइ हरि गुण गाइये । ब्रह्मपुत्र सनकादि गये बैकुं
ठ पकरि दिन । द्वारपाल जय विजय इनने बरज्यौ तिन्हिको
पुनि । आप दियौ इनको यहै असुर होहु संसार । ह
रि दरसन कौं जात है रोक्यौ बिना बिचारि । हरि ति
नसौं कह्यौ आइ भली सिक्षा नम दीनी । बरज आवत
नमै असुर बुद्धि इनहै कीनी । तिनै कह्यौ मे सावमैं पु

15

सर होइ सब जाइ । तीजै जनम विरह कारि मोकौ मि
लियौ आइ । कशपकी दिन नारि गर्भ ताकौ देऊआ
प । तिनहीं तेज प्रताप देवन नवहु डरव पाप । गा
र्भ माहि सन वर्ष रहि प्रगट भए अति आइ । तिन
दोऊ वनको देषिकैं सुर सब गये डराइ । हिरन्याल
इक भयौ हिरणप कशपप भयौ दूजौ । तिन केवल
२४

वि॰रा
ह॰

को इंद्र वरुन को जनहिं पूजौ । हिरणपाक्ष न वह पृथ्वी
कौं लै राख्यौ पाताल । ब्रह्मा विनती करि कह्यौ दीन
वे थ गोपाल । तुम विन दुनिया और कौन जो ध्रत
र मेंचारै । तुम विन करुना सिंधु कौन पृथ्वी उ
धारै । तव हरि धरि वाराह रूप ल्यायै पृथ्वी उठाइ
हिरणपाक्ष करि गरुह गदा तरनहीं पठ्यौ आइ । ध्रत १६

रकोपकै कहौं वहुतनम अमर सँचारे। अवलैंको
वहुदाव खाड़हौ नही विन मारै। यहि कहिकै मा
रीगदा हरिजू नाहि सँभार। गदाजहता सौकियो
अमर माली हार। नवबालाकरि विनय कहौं ह
रिताहि सँवारे। नमन लीला करन खरन मन
परौ उषारै। माहौं नाहि पचारहु हरि खरगुनभ

वि॰रा ह॰

यो विलास । सूरदास के प्रभु बहुरि कियौ बैकुंठहि

वास ४ । विभास राग ॥ सूरसागर नाल । । श्री

कपिल देव अवतार बरनने । राग बिलावल ॥

हरि हरि हरि हरि सुमरन करौ । हरि चरनारविंद

उर धरौ । जैसौ भयौ कपिल देव अवतार । कहौ सो

कथा सुनो चितधार । कर्दम प्रजा हेत तप कियौ

17

नाम नारिह बड़ व्रत लियौ । हरि सो पुत्र हमारैं होइ
और जगत सब हू पति सोइ । नारायण तिहिं कौं वर
दियौं । मो सौ और नहीं कोऊ बियौं । मेलहैं नम ग्रह
अवतार । नपन जि करै भोग संसार । उड़्गन व नीर
थ मोहि अन्हायौ । सुंदर रूप उहूँ जन पायौ । भोग
समग्री जोरी अपार । विवरन लागे सब संसार ॥

वि॰ रा॰
सू॰
18

तिनके देव कपिल सुत भए । परम भागि भामिनि
तिन लए । कर्दम कह्यो तिनै सिरनाइ । अज्ञा होइ क
हौं तप जाइ । अभेद अछेद रूप मम जान । सभ घट
जो है एक समान । मिथ्या तन को मोह बिसार । जा
इ बसो भावै गृह द्वार । मम सरूप तुम जानो सोइ ।
करन इंद्रियन चेतन जोइ । तन अभिमान जाकौ न

सिजाइ। सोनर रहै सदा सुष पाइ। जब मम हृदे
ह तजि जाई। तब सब इंद्री मलिन नाई। ताकौ जा
न मन कै रहै। देह भ्रमि मानना छिन छिन दहै। और
जो ऐसो जानै नाहि। रहै सु सदा काम भय माहि
यह सुनि कर्दम बनहि सिधाए। उहाँ जाइ हरि प
द चित लाए। हरि सरूप सब बपु मै जानौं। जब

वि॰रा
स॰

19

मोहि जोर सहै मासौं। जो यातन तरस आतम मार।
ऐसी विधि जानौ निरधार। यौं लषि गहि हरि प
द अनुराग। मिथ्या तनकौं कीनो त्याग। तन
हि त्यागकै हरि पद पायौ। रूपमहन हरि स्वरूप वि
न लायौ। इहो कपिल सौं माता कहै। प्रभु मेरो
अज्ञान तमदहो। आत्मज्ञान देहु समझाई॥ १९

जाने जनम मरन दुख जाई। कपिल कह्यौ कहौ न

भभो ज्ञान। भक्त होइ नर तो को जान। भक्तनरनि

के लछन कहौं। तेरे सब संदेहै दहौं। भम सरूप

जो सब जान। भगन रहै निज उद्दम ग्यान ग्रह दुख

भाव कछु मन हिन ल्यावै। मानामोन र भक्त कहा

वै। औरजो मेरो रूप न जानै। ऊहै वहै न निज उद्द

वि·गा·
सू·

मदानै। जोको इहि विधि जनम सिराइ। सोनरन
रकैं नरकैं जाइ। ज्ञानी संगत उपजै ज्ञान। तातैं सा
ध संग नित करना। जातै मिटै जनम अरु मरना-
थावर जंगम मै महि जानैं। दया सील सौ छिनमा
नैं मन संतोष दृढ करै समाधि माना नाको कहियै
साध॥ इति हरमासार परिच्छेद: संपूर्णम ॥ ॥

20

बे॰रा॰ ओंअथ बेंगाली रागिनी प्रारंभः हनुमान्मतेन ॥
१ बेंगाली रागिनीका प्रातःकाल समयहै अरु ओडव
है ग्रेशन्यास इसका खड्जहै ऋषभ पंचम वर्जितहै
मोरवत् स्वरहै जंबूदीपमें जन्महै विप्रवर्णहै देवकु
लमें उत्पन्नहूवीहै अग्नि इसका देवताहै हनुमा
न ऋषिहै अनुष्टुप छंदहै अरु इसकी मथ्या नाय १

का है और दलनायक भी है और इसका शांति रस है
गंधार इसका भी आदिस्वर है और इसका शयन स्थल
है ॥ अथ ध्यानम् ॥ श्लोक ॥ मनोज्ञ वक्त्रा शुभ भू
षितांगी शुकं दधाना परमां परस्याः प्रोक्ता कुमारी
कमनीय मूर्ति वैतालिकेयं शुचि गेय गीता ॥
पूर्णा नाम त्रयो येना कल्लीनाथेन भाषिता तोडी

बें·रा· २ वराटी जयतश्री मिश्रिनाथ बेंगालिका ॥ अथ
भाषाध्यानम् ॥ भीषको भाजन दाहने हाथ त्रिश
ल विराजतहै करवायें ॥ सेत विभूति परे तनमें
सोयहै तपसीनके भेष बनायें ॥ छाजत सीस ज
टानिको जूट स्वरूप अनूप डरेन डरायें ॥ दीपत
है रविकी हर वल्लभ राग बेंगालिन देत बतायें ॥ २

इति भाषाख्यानम् ॥ अथ मध्या नायकालक्षणम्

चंद कैसो भाग भाल भृगुटी कमान कीसी मैन कै

से पैने सर नैनन विलास हैं नासिका सरोज गंध

वाहसे सुगंध वाह दारयौं से दसन कैसोवी ज्वरी सो

हासहै भार कीसी ग्रीव भुज पान सो उदर और पंक

जसे पाइ गति हंस कीसी जासहै देखीहै गुपाल एक

वै॰ग॰
३

गोपिका मैं देवतासी सोनेसे शरीर सब सोंधे की
सी वासहै ॥ इतिमध्या नाइका लक्षणम् ॥ अथ
दत्त नाइक लक्षणम् ॥ हरिसे हितूसो भ्रम भूलि
हूँन कीजे मन होनोकरि हिये हूँनै होत हित हानी
है ॥ लोकमै अलोक आनिनी केऊंकौ लागतिहै
सोना जूको हननोन कैसे उर आनियै आंषिन जू

३

देषियत सोई सांची केसोदास काननकी सनी सांची

कबहूंन मानियै ॥ गोकलकी कुलटाएयौं ही उल

टा बकैहै आजलौ नोंवसैईहै काल्हिकौन जानियै ॥

इति दत नाइक लक्षणम ॥ अथ शांति रस लक्षण

देषै नहीं श्रर विंदनयौं विन वेदकी आनंद केद नि

काई ॥ कामनि काम कथा करै कानन नाके त्रिया

ब-रा-
४

मकी सुंदर ताई ॥ देषि गई जबतैं नंदम कौ नव तैं
कहु बाहिन देषी सुहाई ॥ क्यौं उं गी प्रान जो देषवि
ना ग्रहो देइन कान्ह कहूं कै दिषाई ॥ इति शंगित
रम लक्षणम् ॥ अथ विनियोगः ॥ ॐ अस्य श्री
बंगाली रागिनी मंत्रस्य हनुमान ऋषिः अनुष्टुप्
छंदः अग्नि देवता ह्रीं बीजं मनो कामना सिद्धये ४

वंगाली रागिनी जपेविनियोगः ॥ अथकरन्यासः

ऊँ ह्रीं वंगाल्यै अंगुष्ठाभ्यांनमः ॥ एवंहृदयादिन्यासे

सर्वंकुर्यात ॥ अथ वंगाली रागिनीमंत्रः ॥ ऊँ ह्रीं

श्रीं ह्रूं वंगाल्यैनमः ॥ अथापरोमंत्रः ॥ ऊँ वं वंगाल्यै

नमःऊँ इतिमंत्रः ॥ अथ षोडशोपचार पूजा वि

धाय ॥ आसने पाद्ये अर्घ्ये आचमनीये वस्त्र यज्ञोप

वं·रा· ५ वीतं गंधं अक्षतं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं दक्षिणा ध्रुव
रागमनीयम् सर्वं पूजनं कुर्यात् ॥ जपसंख्या ५.....
अथ रागिनी वंगाली अग्नि देवता मंत्रः ॥ ओंह्रें
ह्रांतभजेनमः ॥ तस्य ध्यानम् ॥ शुक रुच गाते
देवे शक्ति हस्ते त्रिलोचने । स्मरा जनेन मे शुके शु
भ वर्णो ह्रतां शनम् ॥ इति देवता ध्यानम् ॥ ॥ ५

अब बंगाली रागनी का येह ठाठ है ॥ रिखभ स्थिर
गंधार चरा मधम उतरा पंचम स्थिर धैवत उतरा
कहीं संपूर्ण भी कही है
निषाद चरा रिखभ पंचम वर्जित है ॥ अथ सरगामः
ओडव ॥ सा गा म ध नी ॥ सा गा म ध नि सा सा नि ध
म गा सा ध म सा सा नी गा सा गा म ध सा ॥ इति बंगा
ली रागनी ओडव सरगामः ॥ अब इसकी येह गत है

बे॰ गा॰
६

6

प म प नि प म ग म
दादरभैरवका ॥ डिड्डा डिड्ड ड्डा ड्डा डा डा ड्डा डिड्ड

प नि सै सै प नि सै
डा डिड्ड डाड्डा डाडाड्डा डिड्डडा डिड्ड डाड्डा डाडाड्डा

सै नि सै नि प म ग म नि प म
डिड्ड डा डिड्ड डाड्डा डाडाडा डिड्डडा डिड्ड डाड्डा

ग सै
डा डाड्डा ॥ अथ मता तेरण बेगाली मे पणी गात

रे म पै नि प पै म ग रे सै रे
येहहै ॥ डा डिड्ड डाड्डा डा डाड्डा डिड्ड डा डिड्ड डा

ग ग रे मै रै म म नि पै
ड्डा डाडा ड्डा ॥ इतिस्थायी ॥ डा डिड्ड डाड्डा डा डिड्ड ६

उाडा उाडु डुाडु डिडु उाडिडु उाडा ॥ इत्येतरा ॥

अथास्याङ्गलापः ॥ ननरी इना आनन उनन उआ

नन थद ननरी नने नना उनननना आनरा ननन

रेव नानम ॥ इतिस्थाई ॥ ननन थदनने आनन

नम् नाननै नना नन नरी नना आन नान नने

नन नरीन नाननरी रना नना आन नान आन नान

वे॰ रा॰
७

रान रनम ॥ मालकौशस्य ललितो यशो भौ
मिश्रितो स्वरैः । वेराली जायते नश एवीके गा
न मिष्यते । खड्जांश रहन्यासा हेमुणी वेरालिका
दिवसः प्रथमे यामे शारदि [illegible] गानमीरितम्
प्रथराढक्रमः षड्ज सम ऋषभ उतरा गंधार
भी उतरा मध्यम उतरा पंचम निर्वल धैवत ऊ ७

ध्रुवक उत्तरा निषाद वर्ज ॥ अथ बंगाली रागि

नीकी सरगम संपूर्ण कहिते है ॥ सं म प ध म ग

रे सं म प सं नि प ध म ध म ग रे सं ॥ इत्यस्थाई ॥ ध नि

सं नि प ध म ग रे सं म प सं नि प ध प ध म ग रे सं ॥

इत्यंतरा ॥ अथाभोगः ॥ सं म प ध म ग रे सं म प

ध म ग रे सं ॥ प नि सं नि प ध म ग रे सं प नि सं नि प

वे॰ रा॰ पि मे गा रे सै ॥ इति वेंगाली रागिनी संपूर्णा सरगमः

८

96

८

राग वेगाली ताल ध ध्रुवपद परेब्रह्मका ॥

धन्य तेरी ईश्वर तेरी सभ रचना एकते अनेक रूप ते

री सभ घटना ॥ इति स्थाई ॥ नाभी ते कमल भ

यो पदम कल्प रचना परमेष्टी ब्रह्म जहो करत तेरि

रटना ॥ इत्यन्तरा ॥ अथ आभोगः ॥ तेही ते शक्त

भई तवी सृष्टि सरवही चार भांत जीव जंत नाना वि

बे॰ रा॰ य नटना ॥ जैसे हैं नभ अनंत प्रवरहो तैसे केतनवा
४ ल निधी तैसोशावरा भव भय सभ कटना ॥

9

रागिनी बेगाली ताल ४ ध्रुवपद परेब्रह्मका

प्रथम नाद उर प्रकाशतैं प्रकट कीयो ऊँकार परे
ब्रह्म रूप जाको ध्यावत सभ योगी ॥ इतिप्रथमाई
शाहत ऊँअग्ना हत सो नाद भयो दोउ रूप अन हत

कै सेवनसैं नशत दुख होयगो ॥ इत्यंतरा ॥ अथ

आभोगः ॥ भवकों दुख नाश हेत आहत को ध्यान

कीयो षड्जादि सप्त भेद जानत गुणी लोगो ॥ तो

सों कल रागन की प्रकट करी दीना नाथ चरण श

रण बाल निरोय तेरो शत्रु सायो ॥ इति आभोगः

10

रागिनी बंगाली ता ध ध्रुवपद शक्तिका ॥ तेंही
आद शक्ति तेंही विश्व सकल करण हार देव विप
द काटनकों असिरण की जारी ॥ इति अस्थाई ॥ प
क समे शोणनिजू योगनींद धारी करण खोज मलज
निरी असुर भये भारी ॥ इत्यन्तरा ॥ अथ आभोगः ॥
ब्रह्माकों खाइ पडे मछुन हिनराशी मधुकैटभ नाम

के. रा.
११

धैवै ग्राम बड़ पसारी ॥ ब्रह्मा श्रुति भीन पेष श्री
शानी दयारी जगदी श्वरि शरण पसो तेहि तेहि
कारी । मधुकैटभ मारणकों विष्णुनेत्र हीये नास
ग्रवे बाहुतेंहि निकस दर्शनकों पारी । तबही
विष्णु जागि उठे अस्त्रन सों युद्ध करा मायाके मूल
नतै मधुकैटभ मारी । बाल निधीनेरि शरण बो

छिन कौं हरकरे दुष्टनके मारनकौं दश भुजवे भज
यारी ॥ इतिमहाकालीस्तुति ॥

रागिनी बंगाली ताल ३ ध्रुवपद महालक्ष्मीका
श्रीमहा लक्ष्मी चरण शरण करो भाई जिह प्रतापज
गत सकल करत काज याई ॥ इतिअस्थाई श्रीपति
धर ब्रह्मलोक रुद्रलोक इंद्रलोक ब्रह्मा हर भूप सभी

वे॰गा॰
१२

12

नाम सम सुभाई ।। इमेतरा ।। अथ ख्यामोगः ।। प
क समें मंहिष रूप असुर कीन धाई हारे गये देव
सभी हरि हर ढिग जाई ।। क्लेश देष देवन को हरि
हरको रोष भयो देवन को तेज पुंज असुर नम छि
पाई ।। जगत लोभ असुर देष अवरज हो याइ गायो
पाद ज्ञात कर त्रिसूल काट गर गिराई ।। जैजैजै

वगि भई देवन की पौर गई काहे कृपा बाल निधे
वरणन किन लाई ॥ रागिनी बंगाली ताल २॥
ध्रुव पद सरस्वती का ॥ सेवो निस वासर रेन सुरस्व
ति सुर दानी जिह नारद तुंबर पाइ जानत गुणि ज्ञा
नी ॥ इतिस्थाई ॥ हैम ग्रहरऔ निहैम पीर की
न देवनकौ वैसवीके धाम गये गिरी हिमको खा

के. रा.
१२
13

नी ॥ इत्यंतरा ॥ अथ आभोगः ॥ कहे नमो नमो
नेह हि क्लेश कटहो रानी सन हि स्नान कीयो गंग
कौशिकि हाव दानी ॥ ग्रति सेदर रूप देष हन से
भ जाइ कह्यो धूम्रलोचन जाइ दीयो चंड मुंड हानी ॥
रक्तबीज पान कीये अम्हर राइ घात दीये जैजैजै वा
लानिधी रटन नित वानी ॥ सेवो- ॥

पा. ३५-३

रागिनी बेंगाली ताल ४ ध्रुवपद गणेशजीका

मे म प से नि प पे मे रे से म

एक दंत बिघन हरन गिरजा सुत श्रीगणेश करन

प से नि प म ग रे

सकल सिद्ध काम सेवन जो ध्यानी ॥ इतिअस्थाई

मे प नि से नि प पे मे ग रे से मे पे

एक समै गिरि तनया उद वरतन देह कियो मभ म

नि से नि प पे मे ग रे

लकौ बाल रूप चेतन कर जानी ॥ इत्यंतरा: ॥

मे ग प नि से नि प पे मे ग रे से

अथआभोग: ॥ आज्ञा ले द्वार पाल द्वारे मै ठाड रहो

बे-रा
१४

14

इस अंग अटन करन आये शिव मानी ॥ तोहीको
अटक दियो शिव इने क्रोध कियो काट गर गिरा
यि दियो गिरजा बिस ठानी ॥ अति व्याकुल रुदन
देख शंकर बन धायि गये हस्तीको काट सीस क
रयो साव धानी ॥ देख पुत्र जीवन पुन देवन मैं
आदि पूजा बाल निधि पूजन बिन सकल कार्य हानी·

रागिनी बेगाली ताल ४ ॥ ध्रुवपद गणेशजी ·

वक्र तुंड वाल रूप कोमल हैं गात जोके गोद लिये

पारवती लाड करत भीनो ॥ पारवती कानन में के

नकिको कुशाम देख मुंड में उतार हूज देत बदन

कीनो ॥ दोऊ बदन बालकके देख मात मुदित भ

ई नैसहि मदन वदन देखन साख दीनो ॥ नैसहि

बे·रा·
१५
15

बाल निधि गण नायक विघन हरन करो दोष रोग
सोग विघनो सोहीनो ॥

रागिनी बंगाली ताल ४ ध्रुवपद शिवजीका ॥

जै शंकर मृत्युंजय कृपासिंधु दीनबंधु आधिव्याधि ह
रकरो पुन उपाधिसारी ॥ इतिस्थाई ॥ आशुतोष तो
हे कहे ऋषि नाग असुरनर सुर देवनको पीर हरी त्रिपु
र दाह कारी ॥ इत्यंतरा ॥ अथआभोगः ॥ अर्जुनके
युद्धसैं प्रसन्न होइ अस्त्रदीयो पाशुपत है नाम जाको

ब·गा·
१६
16

शत्रुन वज्र मारी ॥ बाल निधी तेरि शरण शरण
गन रक्ष पाल वो बिनि कों ध्रुव करो दुर्जनकों मारी
जैशंकर ॥ ॥ रागिनी बंगाली ताल ४ ॥
शिवजीका ध्रुवपद ॥ हो महा देव देवन पत
त्रिपुरान्तक शूल पानि तीन नयन जटा जूट चंद धा
री ॥ इति ध्रुपद स्थाई ॥ तत्काल फल दायक सिद्ध सि

हृदो ख्रित सबनि हृदा करे येही बन भारी ॥ इत्येतत्

प्रथमाभोगः ॥ सिव केत भूप एकनाम दास नीव

शबर बन पखोन पाये न्रपही एकहुं हित कारी ॥

करो प्रीति पूजन नेम विना भस्म धारी सदा करण

लागो नित सबरी निस नारी ॥ नाहि पाई विना

भस्म खोन पान त्यागा दियो जार गेह सबरी सह

बे॰रा॰ १८

17

विना भस्म धारी ॥ कर पूजन पुनही नार देखी सह
श्रुनिहो हेष मकिलै बाल निधि जैजैजै कारी ॥

रागिनी बेंगाली ताल ४ ध्रुवपद विसनजीका ॥

सिव्हे रस विस्ननाम भव तारक जाहि गौल दुःख पा

प पुंज तूल जारन अंगारी ॥ इतिश्रस्थाई ॥ सोके ति

क परीहास सिक गौन हरण कारी करहे लेन नाम लेन

कारन संसारी ॥ इतिअंतरा ॥ अथआभोगः ॥ अंजा

मिल दासी सेवा विषयन कर अति मलीन आप सभी

बें·गा·
१८

बीनगाई करम धरम हारी ॥ ऊँन समै नारायण
भक्तहूंकों चोषकीयो धमसेवक भागराये विस्न
गति धारी ॥ रागिनी बेंगाली ताल २॥ ध्रव
पद। विस्नजीका ॥ सेवो निन नारायण पद्मनाभ
शेष शयन रमानाथ तीर सिंधजोंको ग्रह भारी ॥
इनिद्रस्याई ॥ एक समै अस्वरा स्वर नीर सिंध मथ्य

न कीयो चौदस नैं हरनन जा मोरमा हूपमारी ॥ इत्ये
तरा । अथ प्रभोगः ॥ देष सभी मोहरहे आदर अति
दैतनिसे न्यारा सभी देवनको हरि शोभा धारी ॥ अ
धिक मान धारि लियो पति उज्वल अविनाशी नेरप
द बाल नियो मान स नित धारी ॥

ག་གི
༡༥

19

रागिनी बेंगाली ताल ध्रुवपद सूर्जजीका ॥

दिवा मणि भनि प्रचंड तेज पुंज नेत्र देव जगत सक
लहै चितन जबहि उदय गामी ॥ इति अस्थाई ॥ जो
के रथ एक चक्र आवत घट् धारी दक्षन ओर उतर ये
र अयन दोय जामी ॥ इत्यंतरा ॥ अथ आभोगः ॥
नेदिल बखिन बैरि दिन निस पल मास नामी घट्

बे-रा
२

अनेत सेवत सुमभ तबहि भेद भासी ॥ कालहूं नहि
ईश सभ ही को अंतकारे आपहै अनेनवाल निधी दया
रामी ॥ रागिनी बंगाली ताल ४ ध्रुवपद
सवैका ॥ द्वादशात्म जैजै प्रभ नारायण तुंहि द
श्य मर्त्यलोक देवलोक सभहि कालपारी ॥ इतिश्र
स्याई ॥ जबहि धर्म नाश होत तबहि तेरी वधे जोत

धन घमंड शंड कोध जलन धूम कारी ॥ श्येनरा ॥
अथाभोगः ॥ धना दृष्टि घानहि वर्ष भस्म पिंड
होई सकल धनहि मेघ घेरित नव दृष्टि करे भारी ॥
ज्योति एक रूप तेहि प्रलय कारि पीछे रहै बालनि
पि तेरो रूप मानन पर वारी ॥

वे॰गा
२१

रागिनी बंगाली ताल ४ ध्रुवपद दसग्रोतारका ॥

ओर ब्रह्म परमेश्वर स्वरण आनंद सदा भक्त धर्म ब्राह्म
ण इव देहरूप धारी ॥ इति अस्थाई ॥ मत्स्य ब्रन राज
भक्त रक्षन हित मीन भये अस्वरा सुर सघा हैत कूरम
हित कारी ॥ इंतरा । अथ आभोगः ॥ हेम नेत्र
मार धरा सुकर हो धारी प्रह्लादै रक्षन हित नर हरि

वे·रा·
२२

नन्द भारी ॥ बलि नारन वामन भये परशुराम रामचंद्र
हलाग्रज बाल जैहो बुद्ध कल्कि नारी ॥